

“विकास ऐसा हो जो आफत से बचाए, ऐसा न हो जो कि आफत बन जाए”



बाढ़ सुरक्षा सप्ताह

1-7 जून 2021

हमारा बिहार भारत के अधिकतम बाढ़ प्रभावित राज्यों में से एक है। हमारे 28 जिले बाढ़ प्रवण हैं। जिनमें से 15 जिले अति बाढ़ प्रवण हैं। राज्य के कुल आबादी के लगभग 76 प्रतिशत लोग बाढ़ प्रवण क्षेत्र में रहते हैं। सरकार द्वारा बाढ़ से बचाव के लिए जिला एवं पंचायत स्तर पर अनेक उपाय किये जा रहे हैं। इसी क्रम में बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण एवं आपदा प्रबंधन विभाग के द्वारा जागरूकता एवं बाढ़ पूर्व तैयारी के लिए बाढ़ सुरक्षा सप्ताह मनाया जा रहा है। बाढ़ से पूर्व, बाढ़ के दौरान एवं बाढ़ के बाद उपायों को अपनाकर बाढ़ से बचने एवं उससे होने वाली क्षति को कम किया जा सकता है। आम जनता की सुरक्षा के लिए ये उपाय नीचे दिये जा रहे हैं :-



बाढ़ के दौरान



- 15 अति बाढ़ प्रवण जिलों के नाम :**
1. सुपौल
 2. नधेपुरा
 3. शिवहर
 4. सहरसा
 5. खगड़िया
 6. सीतामढ़ी
 7. दरभंगा
 8. मजफ्फरपुर
 9. मधुबनी
 10. समस्तीपुर
 11. वैशाली
 12. कटिहार
 13. पूर्णियाँ
 14. चम्पारण
 15. भागलपुर
- 13 बाढ़ प्रवण जिलों के नाम :**
1. सारण
 2. नालन्दा
 3. पूर्णियाँ
 4. प. चम्पारण
 5. पटना
 6. सिवान
 7. गोपालगंज
 8. बक्सर
 9. अररिया
 10. रोहतास
 11. किशनगंज
 12. भोजपुर
 13. लखीसराय

बाढ़ के बाद



बाढ़ के समय

क्या करें

पीने का पानी एवं भोजन

- गहराई में गड़े चापाकल का ही पानी पियें तथा जो ऊँचाई पर भी हो।
- क्लोरिन टेबलेट की एक गोली 20 लीटर पानी में डालकर 30 मिनट बाद पानी पियें।
- सामान्य चापाकल को हर 20-30 दिन के अन्तर पर 30-40 ग्राम क्लोथिंग पाउडर से शुद्ध करें।
- कोशिश करें पानी उबालकर ही पियें। पीने के पानी व भोजन को ढक कर रखें।

आत्म सुरक्षा

- सोते समय मच्छरदानी का प्रयोग अवश्य करें। सूखे, सूती व हल्के कपड़े पहनें।
- घर में उचित प्रकाश की व्यवस्था रखें।
- साप के काटे व्यक्ति को तुरन्त अस्पताल ले जायें। साप काटे व्यक्ति का हाँसला बढ़ाये रखें।
- नाविक के निर्देशों का पालन अवश्य करें।

स्वास्थ्य व सफाई

- शौच के बाद राख या मिट्टी अवश्य डालें।
- बच्चों के शौच को तत्काल राख या मिट्टी से ढक दें और उसे गढ़े में ही डालें।
- शौच के बाद सदैव हाथ साबुन या राख से ही धुलें।
- माहवारी के समय साफ, सूती व धुले कपड़े का प्रयोग करें।

प्राथमिक उपचार

- डूबे व्यक्ति के मुँह में यदि कुछ फँसा हो तो निकाल कर पीठ के सहारे लिटा दें।
- डूबे व्यक्ति को ऊँचे स्थान पर या घड़े के ऊपर पेट के बल लिटा दें।
- डूबे व्यक्ति को उठा कर पुनः पीठ के सहारे लिटा कर आराम करने दें।
- मूर्च्छा आ जाने पर मुँह पर पानी का छीटा मारे।
- प्रसव के लिये गांव की आशा बहन से संपर्क कर एम्बुलेंस की सहायता से नजदीकी अस्पताल पर जायें।
- यदि घर में प्रसव होना है तो प्रशिक्षित दायी से ही कार्य करवायें।
- तेज बुखार हो जाने पर शरीर को पानी से पोछते रहे व डाक्टर से संपर्क करें।

पशुओं का रख-रखाव

- पशुओं को सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दें।
- पशुओं को मच्छर से बचाने के लिए नीम के पत्ते का धूँआँ करें।
- पशुओं को बाढ़ के बाद कीड़े की दवा अवश्य दें।
- पशुओं के खुर व पूंछ को पानी से धुलायें करें।

क्या न करें

पीने का पानी एवं भोजन

- बाढ़ में डूबे चापाकल का पानी न पियें। खुला व देर तक रखा पानी न पियें।
- पीने के पानी में हाथ न डालें।
- बासी व देर का रखा भोजन न खायें। भोजन को खुला न छोड़ें।
- साबुन या राख से हाथ धुले बिना भोजन न करें। भोजन पर मक्खियों को न बैठने दें।

आत्म सुरक्षा

- चर्मरोग व सड़न की बीमारी से बचने के लिये गीले कपड़े न पहनें।
- रात में बाहर जाते समय बिना जूता, टाई, लाठी या डण्डे के न जाएं।
- साप के काटने पर झाड़ू-फूँक न करावें। साप काटे व्यक्ति को सोने न दें।
- नाव पर क्षमता से ज्यादा बोझ न लावें। बाढ़ के पानी में बिना सुरक्षा के न जायें।

स्वास्थ्य व सफाई

- अस्थायी शौचालय का निर्माण पेय जल स्रोत व आवास के पास न करें।
- घर के आस-पास पानी जमा न होने दें।
- साबुन या डिटरजेंट पाउडर के बिना धुले कपड़े न पहनें।
- घर के कूड़े कचरे को घर के आस-पास न फेंकें।

प्राथमिक उपचार

- डूबे व्यक्ति का पैर पकड़ कर कदापि न घुमायें।
- अपनी सुरक्षा के उपाय किये बिना डूबते हुये को बचाने का प्रयास न करें।
- डूबे व्यक्ति को बिना डाक्टर की सलाह के कोई दवा न दें।
- हड्डियों में चोट लगने पर मालिश न करें।
- कट-फट जाने पर किसी घरेलू सामग्री जैसे हल्दी, चूना इत्यादि न लगायें।
- प्रसव के दौरान किसी भी गन्दी वस्तु जैसे कपड़ा, पुराना ब्लेड आदि का प्रयोग न करें।
- तेज बुखार के दौरान व्यक्ति को चादर, कम्बल न ओढ़ायें।

पशुओं का रख-रखाव

- कोचड़ वाले स्थान पर पशुओं को न बाँधें।
- पशुओं को बाढ़ का पानी न पीने दें।
- बाढ़ में डूब घास को न खाने दें।
- पशुओं को सड़ा व पहले का भीना भूसा न खिलायें।

सौजन्य : Unicef & Grameen Development Services, Sitamarhi

बाढ़ से पहले



आपदाओं में हर पशु का महत्व

आपदा से पहले

- सुनिश्चित करें कि सभी पशुओं का पहचान चिन्ह हों, जैसे कान पर टैग, ब्रांडिंग, रंगीन टैटू, दस्तावेजी साक्ष्य इत्यादि कोई हो।
- अपने और अपने पशुओं के लिए एक आपातकालीन किट तैयार करें।

आपदा के दौरान

- पशु छोड़ते समय पट्टा, रस्सी, मोहरा एवं गर्दन की रस्सी को उन पर नहीं छोड़ें क्योंकि इनके द्वारा पशुओं को एक डालने से बचें और गंभीर रूप से सुरक्षित स्थान पर पहुँचने में रुकावट आ सकती है।
- अपने पशुओं को पर्याप्त चारा, पानी, पशु चिकित्सीय देखभाल और आवास उन्हें सुरक्षित स्थान पर ले जाना और प्रदान करें।
- संभालना कठिन होगा।

सौजन्य : WSPA, India



कोविड से बचाव संबंधी सावधानियाँ

1. कोविड-19 संक्रमण से बचाव संबंधी प्रोटोकॉल को ध्यान में रखते हुए मास्क लगाएँ, सामाजिक दूरी बनाये रखें एवं हाथों को साबुन से बार-बार धोएं।
2. सर्दी, खांसी, बुखार, एन्टी एलर्जी संबंधी दवाएँ एवं कोविड-19 संक्रमण से संबंधी सामान्य दवाओं का भी संग्रहण अवश्य कर लें।
3. कोविड-19 के दृष्टिगत सेनेटाईजर/साबुन एवं पल्स ऑक्सीमीटर भी साथ रखें।



बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

(आपदा प्रबंधन विभाग, बिहार सरकार)
द्वितीय तल, पंत भवन, नेहरू पथ (बेली रोड), पटना-800 001, फोन : (0612) 2522032, फेक्स : (0612) 2547311
visit us : www.bsDMA.org; e-mail : info@bsDMA.org अन्य उपयोगी फोन नंबर, राज्य आपातकालीन संचालन केन्द्र (SEOC - (0612) 2294204, 205)



आपदा नहीं हो भारी यदि पूरी हो तैयारी।।